हर समय, हर शुभ कार्य, श्रेष्ठ सहयोग में हाँ जी का पार्ट बजाओ

आज बाबा के पास भविष्य प्रोग्राम्स प्रति जाना हुआ। जाते ही बापदादा ने स्नेही मूर्त, मोहिनी मूर्त से दृष्टि देते हुए मिलन मनाया और अपनी बांहों का हार हमारे गले में पहना दिया। हम भी बांहों के हार में समा गई। कुछ समय

के बाद बाबा बोले, बच्ची आज क्या-क्या समाचार लाई हो? मैं बोली बाबा आज तो आपके आह्वान का प्रोग्राम लाई हूँ। बाबा बोले, बाप तो बच्चों के बुलावे पर हर समय आवश्यकता अनुसार जी हाजिर है ही और यही राय बच्चों को भी देते हैं कि हर समय हर शुभ कार्य, श्रेष्ठ सहयोग लिए जी हाँ, हाँ जी का पार्ट बजाते चलो, उड़ते चलो। संगमयुग पर बापदादा को बच्चों के सिवाए और काम ही क्या है। याद-से-याद तो मिलती ही है। उसके बाद बाबा को भट्ठियों का प्रोग्राम सुनाया। बाबा बोले, यह समय-प्रति-समय आपस में मिलना, शक्तिशाली स्नेह युक्त पालना देना बहुत आवश्यक है। बापदादा भी बच्चों का स्नेह मिलन, रूहरूहान करना, रिफ्रेश होना देख-देख हर्षित होते रहते हैं। इसलिए ही तो यह बेहद का स्थान बना है। सिर्फ सीज़न और समय को देखते चलना। समय अनुसार अब तो बच्चे भी बढ़ने हैं और बच्चों की स्थिति भी बढ़ती जायेगी और स्थान भी बढ़ते ही जायेंगे। ये ही ड्रामा की नूंध है, जो होनी ही है।

उसके बाद बाबा को दादी जी और अपना बाम्बे में हॉस्पिटल के उद्घाटन प्रति जाने का समाचार सुनाया। सुनकर बाबा मीठा मुस्कराते बोले, यह साधन भी वन्डरफुल है। बहुत अच्छा सेवा का साधन और आत्माओं में सेवा के स्नेह का आवाज फैलाने वाला है क्योंकि जो गवर्मेन्ट डिपार्टमेंट ने स्वयं आफर की और अब भी साथ में दिल से सहयोग दे रहे हैं। यह सहज साधन है। बच्चे योगिनी, मीरा, अशोक मेहता फैमली सभी स्नेही सहयोगी दिल वाले और सब निमित्त सहयोग देने वाले एक-एक बच्चा बहुत अच्छी मेहनत कर रहे हैं और साथ में श्रेष्ठ भाग्य भी साथ है जो सब सहज सहयोग दे रहे हैं। अच्छे उमंग-उत्साह से आगे बढ़ रहे हैं और आप सबके जाने से भी और उमंग-उत्साह आगे बढ़ेगा। निमित्त हर एक बच्चे को खास नाम सहित याद और बधाई देना। उसके बाद मैंने बाबा को दादी जानकी जी की सर्विस का समाचार सुनाया और याद दी। याद देते ही ऐसे लगा जैसे दादी जानकी और सर्व साथी भाई-बहनें बाबा के आगे इमर्ज हैं और बापदादा बहुत

मीठी-मीठी स्नेह भरी दृष्टि से बधाई दे रहे हैं। और बोले जनक बच्ची को उमंग बहुत है, विश्व को सन्देश दे बाप से मिलाने का। इतने में क्या देखा कि बाबा ने दादी जी को भी इमर्ज किया और कहा यह ब्राह्मण आत्माओं में उमंग-उत्साह दिलाने में विशेष निमित्त आत्मा है। ऐसे कहते ही बाबा ने दोनों दादियों को अपने हृदय में समा लिया। हम तो देखकर खुश हो रही थी, इतने में बाबा बोले, बच्ची आप भी आकर समा जाओ। दोनों दादियों का आपसे दिल का प्यार है। ऐसे ही हम तीनों ऐसे समा गई जैसे तीनों एक हैं। बस यह वन्डरफुल दृश्य तो अति अलौकिक प्रिय था। बाबा तीनों को मीठी दृष्टि देते बोले - मेरे सच्चे, मेरे दिल के दुलारे सदा उमंग-उत्साह में रह औरों को भी उमंग-उत्साह दिलाने वाले बच्चे बाप को अति प्रिय हैं, सदा समीप हैं। ऐसे ही अलौकिक मिलन मनाए मैं अपने वतन पहुँच गई।